Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 1, January - 2026

DOIs:10.2018/SS/202601015 --:-- Research Paper / Article / Review

थारु समुदाय के उत्थान में नानाजी देशमुख का देशज समाज कार्य हस्तक्षेप

डॉ. अभिषेक कुमार राय
पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो.
समाजशास्त्र विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
ई–मेल : abhimsw@bhu.ac.in

सारांश: यह शोध–पत्र उत्तर प्रदेश की थारु जनजाति और नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप पर आधारित है। जिसमें थारु जनजाति की विविध चुनौतियों और समस्याओं के समाधान के लिए नानाजी देशमुख द्वारा स्वयंसेवी संगठन दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से निपटने और उसके समाधान के लिए प्रयास किया गया। वर्तमान समय में भी उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जिले में थारु समुदाय के उत्थान में दीनदयाल शोध संस्थान प्रमुखता से सक्रिय है। शोध–पत्र का प्रमुख उद्देश्य थारु समुदाय में नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य पहल का हस्तक्षेप–पूर्व, हस्तक्षेप और हस्तक्षेप–पश्चात की स्थितियों का अध्ययन करना है। इसके साथ ही शोध–पत्र स्थानीय क्षेत्र विशेष में थारु समुदाय में परिलक्षित होती वर्तमान चुनौतियों को देखने और उसके समाधान में सहयोग के लिए प्रस्तावित देशज समाज कार्य हस्तक्षेप प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। शोध–पत्र गुणात्मक स्वरूप पर आधारित है। जिसमें गुणात्मक शोध प्रविधि, उपकरण का उपयोग करते हुए धरातलीय अनुभवजन्य तथ्यों की व्यापक व्याख्या विषयगत विश्लेषण विधि से प्रस्तुत की गई है। शोध–पत्र थारु समुदाय में नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप पर विस्तृत जानकारी प्रदान करने का प्रयास करता है।

मुख्य शब्द : थारु जनजाति, उत्थान, नानाजी देशमुख, देशज समाज कार्य हस्तक्षेप।

1. प्रस्तावना

आधुनिक विकास की चर्चा में समाज कार्य अभ्यास शोषित, वंचित, उपेक्षित एवं हाशिए पर पड़ी आबादी की जटिल चुनौतियों को संबोधित करने में देशज समाज कार्य हस्तक्षेप के दृष्टिकोण एवं महत्व को तेजी से पहचाना जा रहा है। देश में जनजाति समुदाय ऐतिहासिक बहिष्करण, संरचनात्मक असमानता और सांस्कृतिक रूप से असंगत विकास पहलों के कारण लगातार सामाजिक एवं आर्थिक मुख्यधारा में पिछड़े दिखाई देते है। इस समुदाय में ऊपर से नीचे के विकास मॉडल अक्सर सतत एवं स्थायी परिणाम देने में असफल रहे है, क्योंकि इसमें स्थानीय समुदाय की वास्तविक आवश्यकताओं, स्थानीय पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों, सांस्कृतिक प्रथाओं और सामुदायिक भागीदारी को दरकिनार किया जाता रहा है। इसके विपरीत देशज समाज कार्य हस्तक्षेपों में स्थानीय जुड़ाव, भागीदारी, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और स्थानीय ज्ञान का उपयोग कर विकास पहल को सतत एवं स्थायी बनाने पर बल दिया जाता है। उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्रों में बसा थारु समुदाय एक स्थानीय देशज समूह है। सांस्कृतिक रूप से समृद्ध लेकिन सामाजिक रूप से हाशिए पर पड़ी आबादी का प्रतिबिंब माना जाता है। यह पारंपरिक कृषि और जंगल आधारित आजीविका पर निर्भर रहने वाला समुदाय है। इस समुदाय में कम शैक्षणिक उपलब्धि, गरीबी, सीमित स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच, भूमि अलगाव एवं सामाजिक बहिष्करण जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। नानाजी देशमुख ने बलरामपुर में इस समुदाय के उत्थान

के लिए शिक्षा, कौशल, आजीविका सुरक्षा, सांस्कृतिक पहचान जैसे अनेक क्षेत्रों में पहल की और थारु समुदाय के सशक्तिकरण, भागीदारी, सांस्कृतिक निरंतरता पर जोर दिया। यह गुणात्मक अध्ययन थारु समुदाय में नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप का पता लगाने, उसका परिणाम जानने और वर्तमान स्थिति को समझने का प्रयास करता है।

थारु जनजाति

थारु जनजाति नेपाल एवं भारत के तराई क्षेत्र में रहने वाली प्रमुख जनजाति समुदाय है। भारत में यह उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड एवं बिहार के तराई क्षेत्र में निवास करती है। भारत में उन्हें 1967 से अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता प्राप्त है। उत्तर प्रदेश में 2011 की जनगणना के अनुसार 12 प्रमुख जनजाति समूह की कुल जनसंख्या 11,34,273 थी। गोंड और खरवार के बाद थारु जनजाति उत्तर प्रदेश की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति समूह है। 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में थारु की कुल जनसंख्या 1,05, 291 थी। (सिंह, 2025) जिसमें 53,687 पुरुष एवं 51,604 महिला शामिल थी। थारु जनजाति की कुल जनसंख्या का 91.5 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। वहीं 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में थारु जनजाति की कुल जनसंख्या उत्तर प्रदेश के 61 जिलों में फैली हुई है। लेकिन उनकी सघन बसाहट उत्तर प्रदेश के तराई जिलों (लखीमपुर खीरी– 47,428, बलरामपुर–24,030, बहराइच–10,641, श्रावस्ती– 4,768 और महाराजगंज–3,721) में प्रमुखता से है। (सिंह, 2018) थारु जनजाति की हृष्ट–पुष्ट शारीरिक बनावट के साथ औसत उचाई, गहरा भूरा एवं स्यामल रंग, तिरछी आंखे, चेहरे पर बाल, नाक धसी एवं सीधी दिखाई देती है। थारु समुदाय की आजीविका का प्रमुख स्रोत कृषि, शिकार और वन उत्पाद रहा है। इनकी भाषा "थरूहट" है। इसके साथ ही यह हिंदी एवं स्थानीय भाषा भी बोलते है। जंगल में रहने के कारण इनमें मलेरिया के खिलाफ जन्मजात प्रतिरोधक क्षमता विकसित बतायी जाती है। थारु महिलाएं समाज में पुरुषों की अपेक्षा अधिक कार्यशील है। सामाजिक कार्यों, परंपराओं एवं प्रथाओं में आपसी सहभागिता और सहयोग इनकी विशेषता है। (पाण्डेय एवं गुर्जर, 2015) तराई के जंगलों में प्रकृति के बीच जंगलों की कटाई कर रहने के कारण अधिकतर थारु गांव के नाम जैसे, बनकटा, बनकटवा, बनकटी और जंगली वृक्षों जैसे, इमिलिया, महुबा, सेमरहवा, जमुनी, सेखुनी, बरगदवा आदि बहुताय में देखने को मिलता है। थारु समुदाय में पुरुषों का रसोई घर में प्रवेश वर्जित होने का रिवाज है। इनके घर के दीवाल पर घोड़ों पर सवार आदमी, हाथी, जंगली भालू, हिरण, बाघ, वन्य पक्षी का रंगीन चित्र दिखाई देता है। इनके घर का द्वार पूरब एवं पश्चिम दिशा में खुलता है। उत्तर एवं दक्षिण दिशा में कोई द्वार नही खुलता। जिसके पीछे मान्यता है की उस दिशा से मृत आत्मा प्रवेश करती है। सभी शुभ कार्य पूर्व एवं पश्चिम दिशा में ही संपन्न होते है। (सिंह, 2015)

थारु समुदाय का भोजन प्रायः कच्चा और उबला होता है। चावल इनका मुख्य भोजन है। थारु समुदाय में स्व–निर्मित देशी दारू का विशेष स्थान होता है। "दारू जहां, थारु वहां" थारु समुदाय की सामान्य कहावत है। धार्मिक कार्यों, शादी–विवाह, अनुष्ठान, नृत्य, फसल कटाई, शिकार एवं अन्य प्रथाओं में सभी कार्य बिना पेय पदार्थ के नही होता है। थारु समुदाय में मौसी एवं मामा की लड़कियों से विवाह को प्राथमिकता देते है। होली त्योहार के बाद सामूहिक विवाह उत्सव आयोजित होते है। विवाह में दहेज का लेन–देन देखने को नही मिलता। थारु समुदाय का पूरे वर्ष अपना त्योहार होता है। इनके पर्व एवं त्योहार धार्मिकता से संबंधित न होकर मौसम से जुड़कर अपने रीति–रिवाज होते है। जिसमें हिंदू मान्यता साफ झलकती है। गांव में वाद–विवाद के निपटान के लिए अपनी पंचायत की संकल्पना विद्यमान है। जिसमें प्रमुख निर्णय गणधुर (मुखिया) द्वारा किया जाता है। (सिंह, 2015) जिसकी बात समाज के सभी लोग मानते है। हालांकि, थारु समुदाय में सामाजिक संपर्क का दायरा बढ़ने से सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन भी तेजी से परिलक्षित हुए है। जिसका परिणाम थारु समुदाय की संस्कृति, सभ्यता, परंपरा और जीवनशैली पर दिखाई देते है। थारु समुदाय के गांवों एवं घरों में आधुनिकता और गतिशीलता दिखाई देती है। बलरामपुर की थारु जनजाति में सामान्य आबादी की तुलना में आर्थिक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य और आधारभूत सुविधाओं की कमी रही है। जिसका प्रमुख कारण जंगलों एवं पहाड़ी क्षेत्रों के

दूर–दराज क्षेत्रों में उनका निवास होना और सामान्य आबादी से संपर्क एवं मेलजोल में कम रुचि रखना रहा है। आय के सीमित साधन, अशिक्षा, जागरूकता एवं जानकारी की कमी, बेरोजगारी, बीमारी आदि ने उनको बहुत पीछे रखा। इसके साथ ही उनके क्षेत्र में सड़क, संचार, अस्पताल, स्कूल, स्वच्छ पानी की कमी जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी और लालफीताशाही की उपेक्षा ने उनको और हाशिए पर ढकेल दिया। नानाजी देशमुख ने जब लोकसभा का चुनाव बलरामपुर से लड़ा तो उन्होंने इस समुदाय की उपेक्षा और सामाजिक स्थिति को गहराई से देखा। नानाजी ने थारु समुदाय के उत्थान के लिए इसे अपने कर्म क्षेत्र से जोड़ा और इसके लिए दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से कई देशज समाज कार्य हस्तक्षेप किए।

नानाजी देशमुख

नानाजी देशमुख दीनदयालजी के एकात्म मानववाद विचार को धरातल पर लागू करने वाले एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जाने जाते है। नानाजी ने दीनदयालजी के विचारों को न सिर्फ आगे बढ़ाया बल्कि उसको साकार करने के लिए प्रयोग दर प्रयोग करते रहे। समाज कार्य के क्षेत्र में देशज ज्ञान परंपरा और तकनीक का उपयोग मानव कल्याण, समूहिक चेतना, सामाजिक समानता, न्याय आधारित विकास एवं ग्रामोत्थान के लिए किया। (राय, 2024) राजनीति से सन्यास लेने के बाद उन्होने दूर–दराज के ग्रामीणों के सामाजिक–आर्थिक कल्याण और उनमें नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के लिए आजीवन काम किया। ग्रामोदय से अंत्योदय और राष्ट्रोदय के लिए स्वयंसेवी संगठन की स्थापना की थी। स्वयंसेवी संगठन दीनदयाल शोध संस्थान दिल्ली, गोंडा, बीड़, नागपुर एवं चित्रकूट प्रकल्प देशज समाज कार्य चिंतन, प्रयोग, प्रविधि, अभ्यास एवं सफल स्थानीय मॉडल का केंद्र बनें। इन सभी प्रयासों से देशज समाज कार्य को मजबूती मिली। मुख्यधारा से दूर धकेले गए हाशिए के समाज के अंत्योदय एवं समाज कार्य में उत्कृष्ट निष्ठावान सेवा के लिए नानाजी को पदम विभूषण सम्मान और मरणोपरांत सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

देशज समाज कार्य हस्तक्षेप

देशज समाज कार्य हस्तक्षेप समाज कार्य अभ्यास का ऐसा क्षेत्र है, जो स्थानीय समुदाय के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों को दूर करने में अपने विशिष्ट दृष्टिकोण और अभ्यास के रूप में पहचाना जाता है। जिसमें देशज ज्ञान और स्थानीय परंपराओं को एकीकृत करते हुए स्थानीय समुदाय (संयुक्त राष्ट्र महासभा, 2007) की भलाई को बढ़ावा दिये जाने पर जोर दिया जाता है। यह स्थानीय विचार, चिंतन, दृष्टिकोण, प्रतिरूपों एवं प्रथाओं को विकसित करने की एक प्रक्रिया है। जिसमें सामाजिक कार्यकर्ता अथवा विकासात्मक संगठन अपने क्षेत्रीय अनुभव, ज्ञान, कौशल, नवाचार की सीख एवं अभ्यास से क्षेत्र विशेष की स्थानीय आवश्यकताओं एवं समस्याओं के समाधान के लिए हस्तक्षेप करते है, जो क्षेत्र विशेष के लिए सबसे उपयुक्त हो। (राय, 2022) जिसमें स्थानीय लोगों की चिंताओं, आवश्यकताओं, स्थानीय संस्कृति, परंपरा, मूल्य, सामूहिक ज्ञान, अनुभव और सामाजिक भागीदारी को केंद्र में रखते हुए हस्तक्षेप किया जाता है। यह सामाजिक कार्यकर्ता को अधिक प्रभावी हस्तक्षेपी रणनीतियाँ विकसित करने और स्थानीय समुदाय (वीवर, 2008) को सशक्त बनाने और उनकी चुनौतियों और आवश्यकताओं के बीच के अंतर को कम करने में सहायता करती है। देशज समाज कार्य हस्तक्षेप में सामाजिक कार्यकर्ता उपनिवेशवाद से उपजे प्रभावों के नुकसान की पहचान भी करता है (ग्रे और कोट्स, 2016), ताकि स्थानीय मूल्यों एवं विश्वास को एकीकृत करते हुए देशज समाज कार्य हस्तक्षेप को स्थायी बनाया जाय। इसके लिए देशज समाज कार्य स्थानीय समुदाय में समग्र दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए उनकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और शारीरिक भलाई के अंतरसंबंध को समझने पर जोर देता है। यह स्थानीय समुदाय में आत्मनिर्णयन और सशक्तिकरण को केंद्रित करते हुए उनकी भागीदारी निश्चित करता है। यह स्थानीय चुनौतियों, जरूरतों एवं प्राथमिकताओं को समझने और जवाबदेही की भावना बढ़ाने तथा स्थानीय समुदाय की समस्याओं के समाधान करने की क्षमता

बढ़ाती है। नानाजी ने देशज समाज कार्य दृष्टिकोण से पिछड़े, वंचित समुदाय के उत्थान एवं सशक्तिकरण के लिए आजीवन कार्य किया।

2. साहित्य पुनरावलोकन

उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र के मूल निवासी थारु समुदाय कई प्रकार से सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना करता है, जो उनके समग्र उत्थान को प्रभावित करते है। उत्तर प्रदेश के थारु समुदाय में सीमित रोजगार, आधुनिकीकरण का दबाव और सांस्कृतिक पहचान का तनाव दिखाई देता है। जहां कुछ थारु समूह आधुनिक सामाजिक–आर्थिक संरचना के भीतर आगे बढ़ते है, लेकिन अन्य लगातार शैक्षणिक, स्वास्थ्य और आजीविका की कमी के साथ हाशिए पर बने रहते है। (लहरी, 2025) थारु समुदाय उत्तर प्रदेश और नेपाल की तराई क्षेत्र में प्रमुखता से बसे है। यह कृषि आधारित आजीविका, समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा और हाशिए पर होने के कारण के लिए जाने जाते है। (श्रीवास्तव, 2016) जहां कम शैक्षणिक उपलब्धि, आर्थिक कमजोरी, सीमित स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी सुविधाओं की कमी परिलक्षित होती है। (वर्मा और सिंह, 2018) इसके बावजूद थारु समुदाय में मजबूत सामाजिक सामंजस्य और देशज ज्ञान प्रणालिया विद्यमान है। स्वास्थ्य अनुसंधान से पता चलता है कि थारु समुदाय में विशिष्ट स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार और स्वास्थ्य स्थिति को प्रदर्शित करती है, जो अक्सर औपचारिक स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुँच, पर्यावरणीय स्थिति और देशज प्रथाओं से मिलकर बनती है। जहां एकीकृत हस्तक्षेपीय रणनीति की आवश्यकता है, जिसमें सांस्कृतिक रूप से सूचित स्वास्थ्य विश्वासों, निवारक प्रथाओं और शिक्षा का समावेश हो। जहां समग्र उत्थान में आर्थिक एवं सांस्कृतिक हस्तक्षेप के साथ स्वास्थ्य घटकों का एकीकरण हो। (द्विवेदी एवं अन्य, 2022) थारु समुदाय की युवा पीढ़ी में अपनी सांस्कृतिक पहचान और अधिकार को लेकर गतिरोध और सक्रियता दोनों दिखाई देती है। अपने बुजुर्गों के सहयोग से अपनी पहचान को मजबूती देने के साथ सामाजिक एवं राजनीतिक संरचना के भीतर समावेशन की वकालत के लिए सामाजिक आंदोलनों में सक्रियता से भाग लेते है। (इंडिया डेवलपमेंट रिव्यू, 2024)

दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद को नानाजी देशमुख ने समाज कार्य हस्तक्षेप की दार्शनिक नींव बनाया। दीनदयाल का दर्शन मनुष्य को एकीकृत स्वरूप (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक) में देखता है। जिसमें व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य पर जोर दिया जाता है। (उपाध्याय, 2016) एकात्म मानववाद नैतिक मूल्यों, आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकृत विकास को बल देकर पूंजीवाद और समाजवादी विकास के उलट देशज विकल्प प्रदान करता है। नानाजी ने दीनदयाल के इस दर्शन को गांव केंद्रित विकास पहल का माध्यम बनाया और शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और आजीविका पर जोर दिया। एकात्म मानववाद खासतौर पर आदिवासी उत्थान के लिए प्रासंगिक है, क्योंकि यह सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक जुड़ाव को स्वीकार करता है। (पांडे, 2018) नानाजी देशमुख को भारतीय ग्रामीण विकास और देशज समाज कार्य में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। सक्रिय राजनीति से सन्यास लेने के बाद दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से ग्रामीण उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। जिसकी स्थापना उन्होंने 1968 में गोंडा जैसे पिछड़े क्षेत्रों में वास्तविक सामुदायिक कार्य में एकात्म मानववाद के दर्शन को लागू करने के लिए की थी। जिसके माध्यम से ग्रामोदय, अंत्योदय, आत्मनिर्भरता पर जोर दिया और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका सृजन में एकीकृत हस्तक्षेपों के माध्यम से गांव को बदलने का लक्ष्य रखा। स्थानीय विकास के उत्प्रेरक में समाज शिल्पी दंपतियों की तैनाती, जमीनी कार्यान्वयन में देशज मूल्य और सहभागिता को शामिल किया। (डीआरआई, 2025) नानाजी का ग्रामीण विकास मॉडल सहभागी और देशज समाज कार्य अभ्यास का एक सफल उदाहरण है। जहां राज्य पर निर्भरता के बजाय सामुदायिक भागीदारी, स्वैच्छिक श्रम, स्व–शासन पर जोर दिया गया। यह नौकरशाही के विकास मॉडल से अलग है। (टंडन, 2015) जिसमें विकास कार्यकर्ता गांव में रहते है। इससे विश्वास और दीर्घकालिक जुड़ाव बढ़ता है। जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, आजीविका को एकीकृत दृष्टिकोण से संबोधित किया जाता है। यह

आदिवासी क्षेत्रों में अधिक प्रभावी होता है, जबकि बाहरी हस्तक्षेपों को अक्सर प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। (देशपांडे, 2017)

भारत में जनजातीय विकास ऐतिहासिक रूप से राज्य के नेतृत्व वाली कल्याणकारी नीतियों द्वारा आकार दिया गया, जो अक्सर देशज समुदायों की सांस्कृतिक और प्रासंगिक वास्तविकताओं को संबोधित करने में विफल रहती है। ऊपर से नीचे के दृष्टिकोण स्वरूप निर्भरता, विस्थापन और सांस्कृतिक क्षरण परिलक्षित हुए। (ज़क्सा, 2019) जबकि देशज समाज कार्य हस्तक्षेप सामुदायिक भागीदारी, पारंपरिक ज्ञान और आत्मनिर्भरता को केंद्रित करते है। देशज समाज कार्य स्थानीय प्रथाओं, सामुदायिक भागीदारी और प्रासंगिक वास्तविकताओं में निहित सांस्कृतिक रूप से आधारित प्रथाओं पर जोर देता है। (कार्लसन, 2020) देशज समाज कार्य दृष्टिकोण में व्यक्तिवादी हस्तक्षेपों के बजाय सामूहिक कल्याण, उत्थान, नैतिक जिम्मेदारी और सतत विकास को प्राथमिकता में रखता है। भारतीय विद्वान मानते है कि मुख्यधारा की समाज कार्य शिक्षा में बड़े पैमाने पर पश्चिमीकरण को अपनाया और अक्सर अभिन्न मानवतावाद , गांधीयन रचनात्मक कार्य, सामुदायिक आत्मनिर्भरता जैसे दर्शनों की उपेक्षा की है। (ग्रे एवं अन्य, 2016, पेन, 2014) नानाजी ने सांस्कृतिक मूल्यों, स्वयंसेवी कार्यवाई और स्वयं–सहायता तंत्र को एकीकृत कर इसे दृढ़ता से जोड़ा।

समुदाय आधारित समाज कार्य हस्तक्षेप की सफलता में जमीनी नेतृत्व की विशेष भूमिका होती है। समुदाय के अंदर या उसके साथ करीब से जुड़े नेतृत्व से भरोसा, जुड़ाव और लंबे समय तक चलने वाली स्थिरता बढ़ती है। (एलिन्सकी, 2016) नानाजी ने पिछड़े क्षेत्रों में स्थानीय मानव संसाधन को लामबंद कर बदलाव लाने वाली जमीनी नेतृत्व का उदाहरण दिया। समुदाय लामबंदी रणनीति बातचीत, मिलकर निर्णय लेने और अपनी मर्जी से हिस्सा लेने पर जोर देती है। इससे वह देशज सामाजिक संरचना के साथ गहराई से जुड़ती है। (माथुर, 2019) सांस्कृतिक स्थिरता का अर्थ सामाजिक–आर्थिक विकास को आगे बढ़ाते हुए सांस्कृतिक पहचान को बचाना और मजबूत करना है, लेकिन विकास के प्रयास अक्सर बाहरी मूल्यों एवं अभ्यास थोपकर देशज संस्कृति को कमजोर करती है। इसके विपरीत देशज समाज कार्य हस्तक्षेप, विकास नियोजन में सांस्कृतिक स्थिरता को शामिल करता है। (सोइन और बर्कलैंड, 2014) नानाजी ने अपने सभी प्रयासों में सांस्कृतिक गर्व, नैतिक जीवन, सामुदायिक परंपरा को विकास की आवश्यकता का हिस्सा माना।

जनजाति विकास एक केंद्रीय चिंता का विषय है। जहां जनजाति क्षेत्र में स्थिर आजीविका आधारित समाज कार्य हस्तक्षेप गरीबी, प्रवासन और सामाजिक अक्षमता को कम करते है। (एलिस, 2000) देशज समाज कार्य हस्तक्षेप का दृष्टिकोण स्थानीय स्तर पर व्यवहारिक आजीविका रणनीति जैसे, कृषि, ग्रामीण उद्योग, सहकारी मॉडल को वरीयता देते है। नानाजी ने अपनी पहल में कृषि विकास, जल संरक्षण, आजीविका सृजन के लिए कौशल प्रशिक्षण को केंद्रित किया। जनजाति समुदाय के विकास में शिक्षा एक परिवर्तकरी उपकरण के रूप में पहचानी जाती है। हालांकि, कई विद्वान तर्क देते है कि औपचारिक शिक्षा अक्सर जनजातीय बच्चों को अलग–थलग कर देती है, जब यह स्थानीय भाषा और ज्ञान परंपरा की उपेक्षा करती है। (बेटेइल, 2015) नानाजी की शैक्षणिक पहलों में शिक्षा के लिए सामुदायिक भागीदारी, सहयोग, स्वाभिमान, नैतिकता, चरित्र निर्माण, कौशल निर्माण, सामुदायिक सेवा और स्थानीय प्रासंगिकता पर केंद्रित रही। स्वयंसेवी क्रिया ने भारत के सामाजिक विकास और अंत्योदय के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नैतिक नेतृत्व और मूल्य–आधारित सेवा विश्वसनीयता और सामुदायिक विश्वास को बढ़ाती है। (सेन, 2018) नानाजी का जीवन निःस्वार्थ सेवा में निहित नैतिक नेतृत्व का उदाहरण रहा है। वही सतत विकास के युग में दीर्घकालिक विकास बाहरी सहायता के बजाय आत्मनिर्भरता पर निर्भर करता है। (सैक्स, 2015) देशज समाज कार्य हस्तक्षेप स्थानीय संसाधन, कौशल और ज्ञान को प्राथमिकता देता है। यह सतत निर्भरता और सांस्कृतिक क्षरण को कम करते है। गुणात्मक शोध विधि को देशज और आदिवासी समुदायों के अध्ययन के लिए काफी हद तक सही माना जाता है, क्योंकि वह अपने अनुभव, कहानियां और सांस्कृतिक

संदर्भों पर जोर देते है। (क्रिसवेल एवं पोथ, 2018) यह अध्ययन थारु समुदाय के उत्थान में नानाजी देशमुख का देशज समाज कार्य हस्तक्षेप को समझने का आधार देता है।

3. शोध प्रश्न

प्रस्तुत शोध–पत्र के प्रमुख प्रश्न है, 1. थारु समुदाय में नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप से पूर्व की स्थिति कैसी थी? 2. थारु समुदाय में नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप को कैसे लागू किया गया? 3. थारु समुदाय में नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप का परिणाम कैसा रहा? 4. थारु समुदाय की वर्तमान चुनौतियां एवं उसके समाधान में प्रस्तावित देशज समाज कार्य हस्तक्षेप क्या हो सकता है?

4. अध्ययन क्षेत्र

नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान अपने स्थापना काल से उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जिले के पचपेड़वा और गैसड़ी विकास खंड के 56 गाँव में थारु समुदाय के अंत्योदय के लिए कार्यरत है। प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जिले में पचपेड़वा विकास खंड में स्थित थारु गाँव इमिलिया कोडर, भुसहर उचवा, बिसुनपुर कोडर, परशुरामपुर रजेहना, कुदरगोड़वा, बनकटवा के थारु समुदाय में नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप से पूर्व की स्थिति, हस्तक्षेप और हस्तक्षेपीय परिणाम की जांच करता है।

5. शोध प्रविधि

शोध–पत्र का अध्ययन गुणात्मक स्वरूप पर आधारित है। जिसमें अन्वेषणात्मक और वर्णात्मक संरचना के अंतर्गत सामाजिक परिवर्तन से पूर्व की स्थिति, हस्तक्षेप, प्रक्रिया, परिणाम, वर्तमान चुनौती एवं संभावित देशज समाज कार्य हस्तक्षेप को केंद्रित किया गया है। जिसमें उद्देश्यपूर्ण निदर्शन से तीन थारु गांव (इमिलिया कोडर, परशुरामपुर रजेहना, कुदरगोड़वा), दीनदयाल शोध संस्थान के दीर्घ अनुभवी कार्यकर्ता (3), थारु समुदाय के तीन सदस्य (प्रधान, जिला पंचायत सदस्य, मुखिया) और तीन केंद्रित समूह चर्चा समूह के 17 सदस्य (महिला, पुरुष, युवा, बुजुर्ग) को शामिल किया गया। प्राथमिक तथ्यों का संकलन गहन साक्षात्कार, केंद्रित समूह चर्चा, क्षेत्र अवलोकन से किया गया। उपकरण के रूप में खुले प्रश्नों के साथ साक्षात्कार मार्गदर्शिका/प्रश्न निर्देशिका/प्रोटोकॉल का उपयोग करते हुए ऑडिओ रेकॉर्डिंग, क्षेत्र नोट्स, छायाचित्र संकलित किए गए। द्वितीयक तथ्यों का संकलन संबंधित शोध साहित्य, आलेख एवं वेबसाइट से किया गया। विषयगत विश्लेषण (ब्राउन और क्लार्क, 2006) के माध्यम से प्राप्त धरातलीय अनुभवजन्य तथ्यों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। थारु समुदाय और स्वयंसेवी संगठन की सहमति, गोपनीयता, संवेदनशीलता जैसे नैतिक विचारों का विशेष ध्यान रखा गया है।

6. विषयगत विश्लेषण

गरीबी की विषम परिस्थिति : थारु समुदाय में हस्तक्षेप–पूर्व स्थिति के अंतर्गत गरीबी की विषम परिस्थिति एवं उसके उप–विषयों की पहचान हुई। जिसे चित्र संख्या 01 में दर्शाया गया है। थारु समुदाय की मुख्य आजीविका का स्रोत कृषि एवं वन उपज थे। लेकिन सीमित कृषि उत्पादन और एक फसलीय खेती। वहीं वन उपज की कीमत भी उन्हें अच्छी नही मिलती थी। थारु *प्रतिभागी के अनुसार "पहले तो बहुत गरीबी थी, छोटे खेत से कम अनाज वाली एक फसल की खेती और बड़ा परिवार जिसे चलाने के लिए लकड़ी बेचकर और मछली पकड़कर पेट पालते थे, बहुत गरीबी और दबाव था, बहुत कम बचत थी"।* आजीविका चलाने के लिए थारु समुदाय मछली पकड़कर, जंगली सूखी लकड़ी बेचकर अपनी आजीविका चलाते थे। लेकिन यह भी मौसमी और कम आय थी।

चित्र 1. थारु समुदाय में (हस्तक्षेप-पूर्व) गरीबी की विषम परिस्थिति का विषयगत एवं उप-विषयगत ढांचा

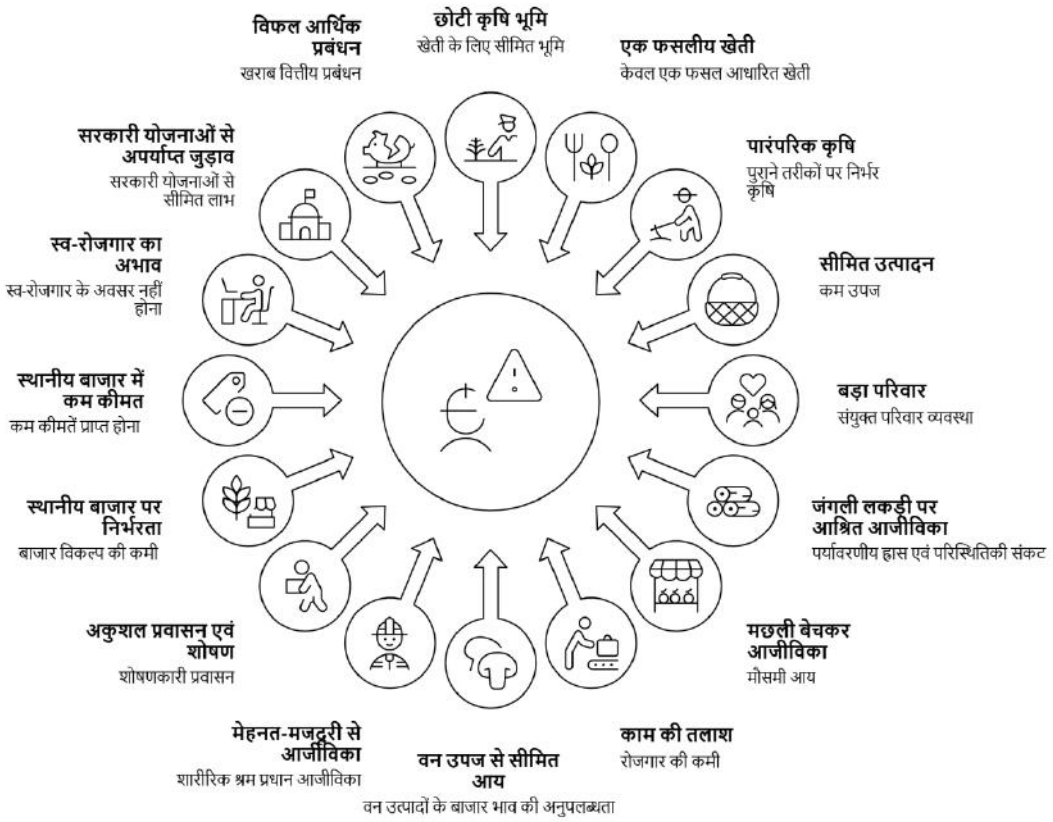

थारु प्रतिभागी के अनुसार "जंगल से मिले उपज को बाजार भाव नही मिलता था, व्यापारी और दुकानदार बहुत कम पैसा देता था, बाहर के बाजार में ले जाने के लिए साधन नही था"। अपनी आजीविका के लिए वह बाहर काम की तलाश में जाने लगे और मेहनत मजदूरी का काम करने लगे। लेकिन वहां भी थारु समुदाय के सदस्यों के सीधे–साधे अथवा कम बोलने वाले स्वभाव का नुकसान उठाना पड़ता मेहनत मजदूरी का कम श्रमिक और साथ में दुर्व्यवहार का सामना भी करना पड़ता। *प्रतिभागी के अनुसार "घर चलाने के लिए जंगल से लकड़ी लाते थे और बाजार में बेचते थे, मछली पकड़कर बेचते थे, बाहर मेहनत मजदूरी भी करने जाते थे, जहां कम कीमत, कम श्रमिक और दुर्व्यवहार भी होता था, कभी–कभी काम का पैसा भी नही मिलता था"।* स्थानीय स्तर पर काम के अवसर और स्व–रोजगार की जानकारी एवं सहयोग नही था। स्थानीय बाजार पर निर्भरता के साथ ही शिक्षा और जानकारी का अभाव था। जिससे सरकारी कार्यक्रमों की योजनाओं एवं लाभों से भी वंचित रहना पड़ता था। *प्रतिभागी के अनुसार "यहाँ काम की कमी थी, बाहर काम खोजते थे, रोजगार नही था, काम की तलाश में बाहर जाना पड़ता था, रोजगार की कोई जानकारी और सहयोग नही था, बाजार भी छोटा था"। थारु प्रतिभागी के अनुसार "शिक्षा और जानकारी तो बहुत कम थी, इसलिए सरकारी योजनाओं की जानकारी नही रहती थी और कोई लाभ भी सही से नही मिलता था"।* इस प्रकार थारु समुदाय (हस्तक्षेप–पूर्व) में गरीबी की विषम परिस्थिति को उसके उप–विषयों से समझा जा सकता है।

शिक्षा एवं जागरूकता की कमी : थारु समुदाय में हस्तक्षेप–पूर्व स्थिति के अंतर्गत शिक्षा एवं जागरूकता की कमी एवं उसके उप–विषयों की पहचान की गई। जिसे चित्र संख्या 02 में दर्शाया गया है। किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा अनिवार्य पहलू है, जबकि जागरूकता वास्तविक समझ विकसित करने और बेहतर निर्णय लेने के लिए आवश्यक है। थारु

समुदाय में शिक्षा का स्तर और शिक्षा सुविधाओं की कमी रही है। दूर–दराज के क्षेत्र एवं बुनियादी सुविधाओं के अभाव में यह और जटिल था। आजीविका की चिंता, असुरक्षा की भावना ने इसे और पीछे धकेला।

चित्र 2. थारु समुदाय में (हस्तक्षेप-पूर्व) शिक्षा एवं जागरूकता का विषयगत एवं उप-विषयगत ढांचा

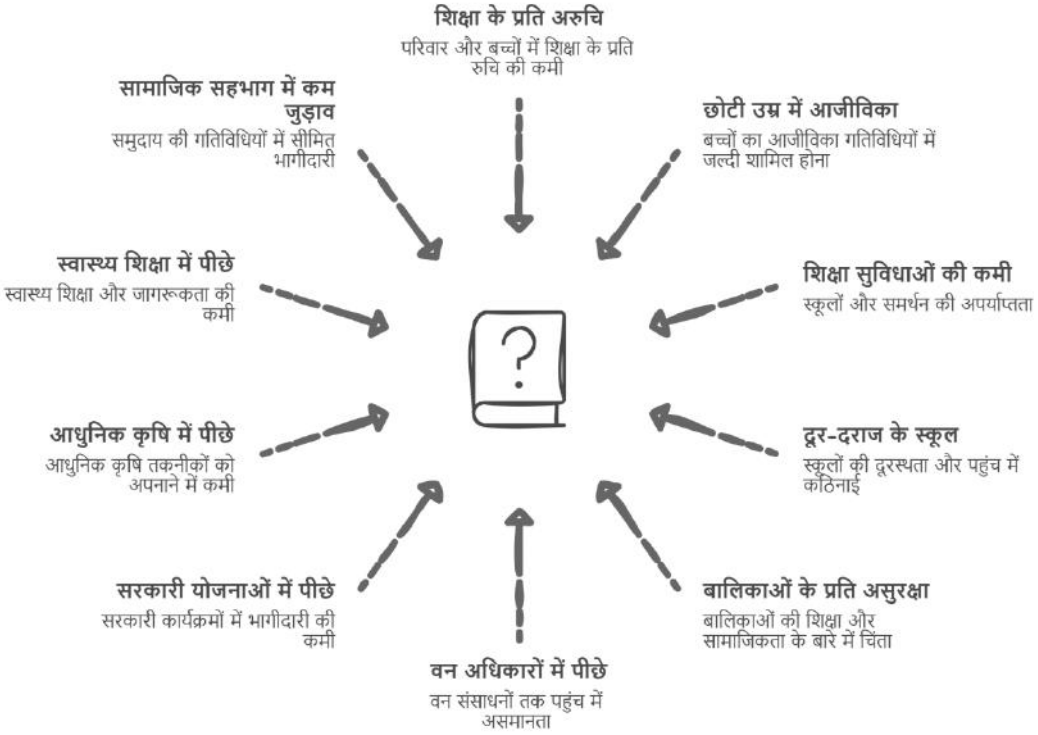

थारु प्रतिभागी के अनुसार *"दूर–दराज में रहते थे, शिक्षा के महत्व से परिचित नही थे, आजीविका की चिंता रहती थी, बच्चे भी उसी कार्य में जुड़ जाते थे जहां बड़े आजीविका के लिए जाते थे, इससे बच्चों और परिवारों में शिक्षा के प्रति कोई रुचि नही रहती थी"*। इस समुदाय में बच्चियों की स्थिति बहुत ही दयनीय थी जहां वह स्कूल तह पहुँच भी नही पाती थी। प्रतिभागी के अनुसार *"गांव से स्कूल बहुत दूर होते थे इसलिए बच्चे भी डरते थे और बच्चों से ज्यादा परिवार को चिंता होती थी, रास्ते में नदी, नाला, जंगल सब पड़ता था, बच्चियों को लेकर चिंता रहती थी कि कुछ उनके साथ गलत न हो जाय फिर बाहर का समाज कैसा व्यवहार करेगा कुछ पता नही होता था"*। शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण इस समुदाय का प्रतिनिधित्व सरकारी नौकरियों में न के बराबर देखने को मिलता था। वहीं बाहरी समुदाय से सीमित संपर्क, सरकारी योजनाओं, वन अधिकार, आधुनिक कृषि, स्वास्थ्य जागरूकता और सामाजिक सहभाग में भी स्थिति बहुत ही पिछड़ी रही। जिसके फलस्वरूप थारु समुदाय की आर्थिक स्थिति भी विषम बनी रही और थारु समुदाय नवीन विचार विकसित करने, जागरूक और अधिकारों को जानने के साथ–साथ अन्य समुदायों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में भी पिछड़ रहा था।

स्वास्थ्य जागरूकता एवं सुविधा की कमी : थारु समुदाय में हस्तक्षेप–पूर्व स्थिति के अंतर्गत स्वास्थ्य जागरूकता एवं सुविधा की कमी एवं उसके उप–विषयों की पहचान की गई। जिसे चित्र संख्या 03 में दर्शाया गया है। स्वास्थ्य जागरूकता एवं सुविधा की कमी से थारु समुदाय में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य चिकित्सा तक पहुँच, गंभीर बीमारी से बचने, समय से बीमारी का इलाज संभव नही था। जिसके लिए वह परंपरागत इलाज पर निर्भर रहते थे। इसके लिए दूर–दराज में उनकी स्थिति और चिकित्सकीय सुविधाओं की

दूरी भी प्रमुख वजह रही। थारु प्रतिभागी के अनुसार *"शिक्षा और जानकारी कम थी और लोग गांव में ही स्थानीय (परंपरागत) इलाज करते थे, जिसमें स्थानीय औषधि और गांव के वैद से बीमारी का इलाज लेते थे। उसमें कुछ बीमारी ठीक होती थी तो कुछ नही भी होती थी। बच्चों का जन्म गांव में ही होता था"*। वहीं दूसरे थारु प्रतिभागी के अनुसार *"स्वास्थ्य सुविधा तो पहले बहुत कम और बहुत दूरी पर थी और वहां तक जाने के लिए सुविधा भी नही होती थी। गांव से वहां तक जाना बहुत भारी था। गांव की नदी, नाला पार कर वहां तक जाने के लीए सड़क और साधन भी नही था"*।

चित्र 3. थारु समुदाय में (हस्तक्षेप-पूर्व) स्वास्थ्य सुविधा एवं जागरूकता का विषयगत ढांचा

विशेषता	विवरण
स्वास्थ्य शिक्षा एवं जागरूकता	अभाव
बालक एवं बालिका विवाह	कम उम्र
मातृ एवं शिशु देखभाल	पोषण की कमी
स्वस्थ शिशु प्रजनन	असुरक्षित
संक्रामक रोग	असंवेदनशीलता
स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ	सीमित पहुँच
स्वास्थ्य सेवाओं से दूरी	लंबी दूरी
सड़क एवं आवागमन	सुविधा का अभाव

थारु समुदाय में शिक्षा की कमी के कारण भी स्वास्थ्य जागरूकता बहुत कम थी। समुदाय के लोग बच्चों की कम उम्र में शादी कर देते थे। जहां स्वस्थ शिशु प्रजनन, मातृ एवं शिशु देखभाल और पोषण की स्थिति और जागरूकता दयनीय स्थिति में थी। थारु प्रतिभागी के अनुसार *"समाज में लड़के और लड़कियों की शादी जल्दी करते थे, इससे वह जिम्मेदार बनते थे और समाज को मजबूत बनाते थे"*। बच्चों में टीकाकरण के अभाव और संक्रामक रोग से अनिभिज्ञता के कारण भी उन्हें गंभीर स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। जबकि स्वास्थ्य जागरूकता, सुविधा एवं देखभाल, पोषण एवं स्वच्छता गरीबी जैसी असमानता को कम करने के लिए आवश्यक मानी जाती है।

सामाजिक बहिष्करण : थारु समुदाय में हस्तक्षेप–पूर्व स्थिति के अंतर्गत सामाजिक बहिष्करण एवं उसके उप–विषयों की पहचान की गई। जिसे चित्र संख्या 04 में दर्शाया गया है। सामाजिक बहिष्करण में व्यक्ति अथवा समाज सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, अवसरों एवं सुविधाओं से अलग कर दिया जाता है। थारु समुदाय भी सामाजिक बहिष्करण का एक जीता जागता उदाहरण था। थारु समुदाय में सामाजिक बहिष्करण के दो रूप देखने को मिलते है। प्रथम जहां सरकारी बुनियादी सुविधाओं की भारी कमी ने उन्हें मुख्यधारा से दूर रखा, जिसकी वजह से उन्हें सरकारी योजनाओं एवं उनके लाभों से वंचित रहना पड़ा। थारु *प्रतिभागी* के

अनुसार "हम लोगों के गांव जंगल में होते है या जंगल के पास। जहां बहुत समय तक सड़क, बिजली, स्वच्छ पानी, नदी–नालों पर पुल, आवागमन के साधन नही के बराबर थे। हम लोगों का संपर्क बहुत समय तक कटा रहा। जिससे हम लोग अपने तक ही सीमित रहे। सरकारी योजनाओं के लाभ भी नही मिलते थे। जिससे जीवन अलग–थलग रहा"।

चित्र 4. थारु समुदाय में (हस्तक्षेप-पूर्व) सामाजिक बहिष्करण का विषयगत एवं उप-विषयगत ढांचा

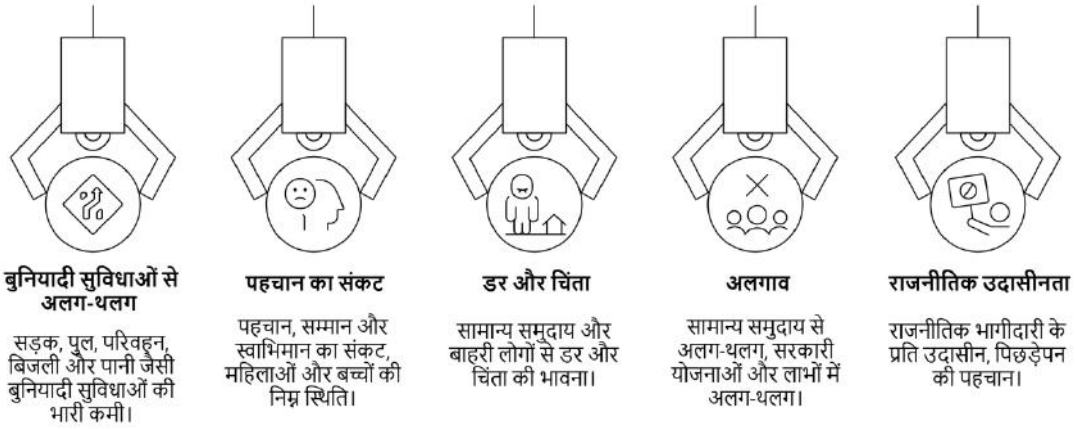

वही दूसरी तरफ स्वयं थारु समाज की जीवन शैली एवं चिंता ने सामाजिक बहिष्करण में योगदान देकर स्वयं को अलग–थलग रखा। अपनी पहचान एवं सुरक्षा तथा सम्मान एवं स्वाभिमान के प्रति दृढ़ रहने वाला थारु समुदाय अपनी सुरक्षात्मक और बाहर का समाज सम्मान देगा या नही इसको लेकर चिंतित रहते थे। जिसकी वजह से उन्होंने सामान्य समुदाय से दूरी रखी। *स्वयंसेवी संगठन के प्रतिभागी के अनुसार "हम लोग शुरुवात में जब थारु गांव में थारु लोगों से संपर्क करने जाते थे ताकि उनकी समस्याओं को समझा जा सके और उसे हल किया जा सके, तो थारु लोग बाजी (बाहरी) आया बाजी (बाहरी) आया कहकर अपने घरों में चले जाते थे और हमसे संपर्क नही करते थे"।* समुदाय में घर, कृषि, पशु, वन उपज आदि में महिलाओं एवं बच्चों की भागीदारी प्रमुख थी, लेकिन परिवार में उनकी स्थिति बहुत ही हाशिए पर थी। थारु गांव की पहचान बाहरी समाज में पिछड़े समाज की बन गई थी और राजनीतिक प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सीमित दिखाई देती थी।

थारु समुदाय में देशज समाज कार्य हस्तक्षेप की रणनीति का विषयगत विश्लेषण : थारु समुदाय के सदस्यों एवं स्वयंसेवी संगठन के कार्यकर्ताओं के गहन साक्षात्कार के आधार पर थारु समुदाय के उत्थान में नानाजी देशमुख की देशज समाज कार्य हस्तक्षेपीय रणनीति का विषयगत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। जिसे चित्र संख्या 05 में दर्शाया गया है। इस रणनीति के माध्यम से थारु समुदाय में समयानुकूल और देशानुकूल परिवर्तन का ढांचा खड़ा किया गया। जिसके माध्यम से थारु समुदाय में गरीबी की विषम परिस्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक बहिष्करण जैसी जटिल समस्याओं से समुदाय को बाहर निकालने और मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया।

चित्र 5. थारु समुदाय में देशज समाज कार्य हस्तक्षेपीय रणनीति का विषयगत विश्लेषण

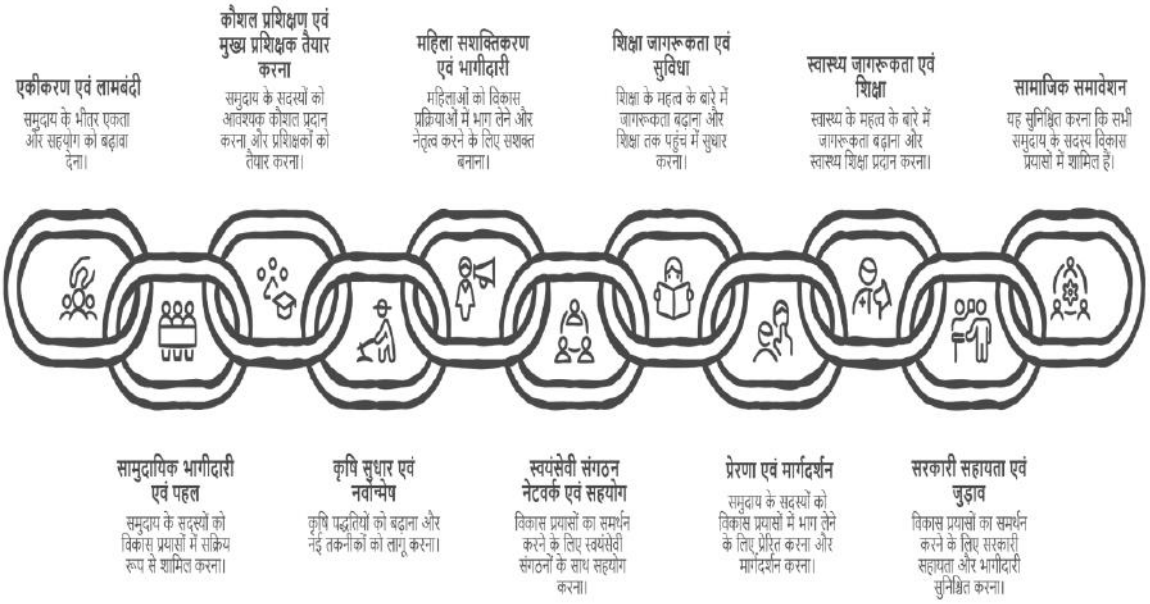

देशज समाज कार्य हस्तक्षेपीय रणनीति के अंतर्गत बाहरी समुदाय से दूर एवं अविश्वास की भावना रखने वाले थारु समुदाय से संवाद स्थापित करना और उनका विश्वास जीतना। थारु समुदाय की समस्याओं को समझने, समाधान खोजने, समस्याओं से निपटने के लिए उन्हें तैयार करने के लिए समुदाय में एकीकरण और लामबंदी को मजबूत करना। थारु समुदाय अपनी समस्याओं को पहचाने और उसके समाधान स्वयं करने की पहल करे ऐसी रणनीति से सामुदायिक पहल एवं भागीदारी को सुनिश्चित करना। गरीबी जैसी जटिल समस्या को कम करने, स्व–रोजगार के अवसर बढ़ाने और समुदाय में कौशल बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना। इसके साथ ही दूर–दराज के क्षेत्रों में प्रशिक्षक की कमी को दूर करने के लिए स्थनीय स्तर पर कौशल प्रशिक्षकों की पीढ़ी का विकास करना। कृषि सुधार एवं नवोन्मेष के माध्यम से एक फसलीय खेती पर निर्भरता को बदलता तथा कृषि में कई फसलों की खेती, फसल विविधता, उन्नत बीज का उपयोग, सिंचाई के साधन का विकास, आधुनिक कृषि जैसी दशाओं का निर्माण करना, ताकि थारु समुदाय की आजीविका के मुख्य स्रोत को मजबूत किया जा सके। थारु समुदाय में निचले पायदान पर स्थित महिलाओं को मुख्यधार में लाकर उन्हें सशक्त बनाना और उनकी भागीदारी को मजबूत करना। थारु समुदाय के उत्थान एवं कल्याण में संलग्न स्वयंसेवी संगठनों से संपर्क स्थापित करना और उनके बीच सहयोग करना। थारु समुदाय के सदस्यों के गांव स्तर पर छोटे–छोटे संगठन का विकास करना, ताकि उनकी पहल और भागीदारी को मजबूत किया जा सके। थारु समुदाय में शिक्षा के निम्न स्तर को ऊपर उठाने के लिए शिक्षा जागरूकता और शिक्षा सुविधा का विकास करना, ताकि थारु समुदाय शिक्षा के महत्व एवं लाभ से अवगत हो सके और शिक्षा का स्तर बढ़ सके। गांव स्तर पर प्रेरणा केंद्र स्थापित कर गांव की समस्याओं को हल करने के लिए स्थानीय युवाओं को तैयार करना। थारु युवाओं को शिक्षा, कोचिंग, रोजगार, स्व–रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के लिए उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान करना।

थारु समुदाय में स्वास्थ्य जागरूकता एवं शिक्षा के माध्यम से स्वच्छता, स्वास्थ्य चिकित्सा, देखभाल, पोषण, स्वस्थ्य प्रजनन, टीकाकरण, संक्रामक रोग आदि से संबंधित भ्रांतियों को खत्म करना और समुदाय में स्वस्थ्य जीवन शैली एवं दूर–दराज के गांवों तक चिकित्सकीय सेवा की पहुँच स्थापित करना। थारु समुदाय के उत्थान एवं कल्याण के लिए सरकारी विभागों, योजनाओं से वित्तीय अनुदान प्राप्त करना, ताकि मूलभूत संस्थानिक सेवाओं का विकास एवं विस्तार किया जा सके। थारु समुदाय को सरकारी

कार्यक्रमों एवं लाभों से जोड़ना। बाहरी समुदाय से अलग–थलग, मूलभूत सुविधाओं से वंचित, पहचान एवं स्वाभिमान के लिए संघर्षरत, पिछड़े समुदाय की पहचान आदि से बाहर निकलने के लिए समुदाय में सामाजिक समावेशन की दशाओं का विकास एवं विस्तार करना। इन सभी रणनीतियों का लक्ष्य थारु समुदाय को एक आत्मनिर्भर समुदाय बनाने के लिए काम करना।

थारु समुदाय के उत्थान में नानाजी देशमुख के द्वारा चलाए गए कार्यक्रम (हस्तक्षेप) का विषयगत ढांचा: थारु समुदाय के उत्थान के लिए नानाजी देशमुख द्वारा सामुदायिक एकीकरण एवं भागीदारी, गरीबी निवारण, शिक्षा सुधार, स्वास्थ्य सुधार एवं सामाजिक समावेशन के लिए कई कार्यक्रम चलाए गए जिसे चित्र संख्या 06 से समझा जा सकता है। जिसका लक्ष्य दूर–दराज में स्थित थारु समुदाय के जीवन में सुधार लाना और आत्मनिर्भर समुदाय बनाने के लिए प्रयास करना था।

चित्र 6. थारु समुदाय के उत्थान में नानाजी देशमुख के द्वारा चलाए गए कार्यक्रम (हस्तक्षेप) का विषयगत ढांचा

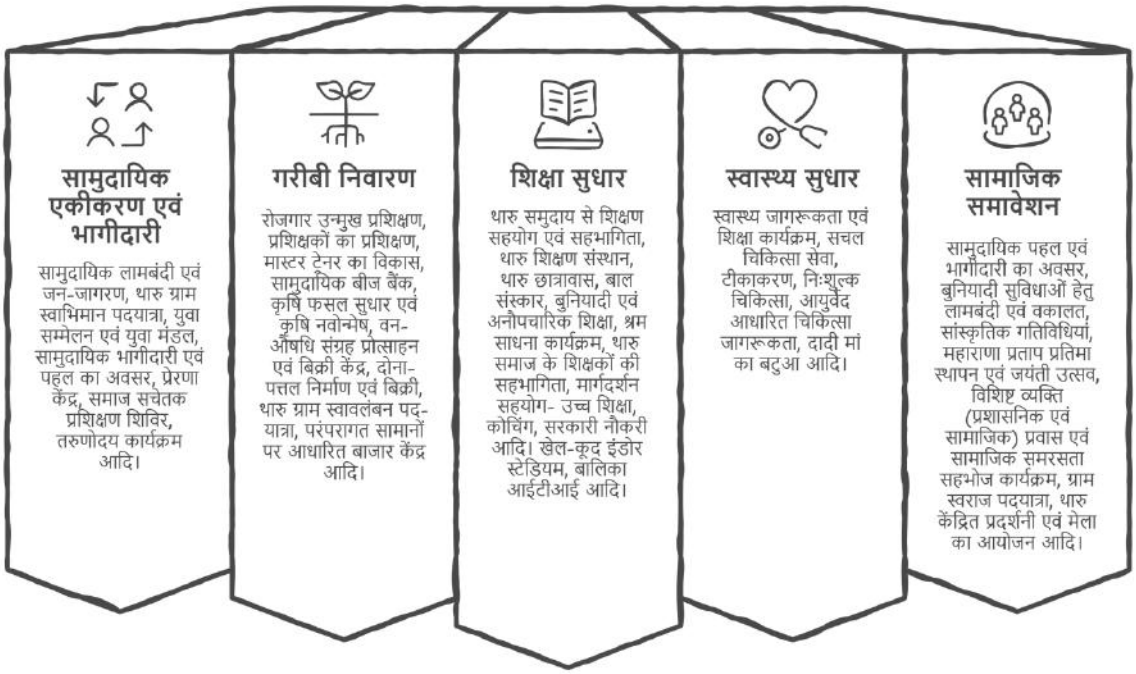

थारु समुदाय के उत्थान में नानाजी देशमुख का देशज समाज कार्य हस्तक्षेप : थारु समुदाय के उत्थान के लिए नानाजी देशमुख ने देशज दृष्टिकोण से कार्यक्रम की रणनीति, नियोजन एवं कार्यान्वयन को दूर–दराज के क्षेत्रों में लागू किया। जिसे चित्र संख्या 07 से थारु समुदाय के उत्थान में नानाजी देशमुख का देशज समाज कार्य हस्तक्षेप को समझा जा सकता है।

सामुदायिक एकीकरण एवं भागीदारी : थारु समुदाय को एकजुट और लामबंद करने के लिए जन–जागरण, पद यात्रा, समाज सचेतक शिविर, युवा एवं समुदाय मंडल, सम्मेलन, तरुणोदय कार्यक्रम चलाए गए। जिसका लक्ष्य थारु समुदाय में एकीकरण की भावना को बढ़ाना, अपनी समस्याओं को स्वयं पहचानना और उसके समाधान के लिए आगे आना था। इन सभी कार्यक्रमों में थारु समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए सामुदायिक विकास को आगे ले जाना। स्वयंसेवी संगठन के प्रतिभागी के अनुसार *"थारु समाज में बाहरी समाज को लेकर अविश्वास और असुरक्षा की भावना थी। समुदाय में अपनी समस्याओं को हल करने का तो छोड़िए उसके समाधान के लिए वह सोचते और विचार भी नही करते थे। समुदाय की पहचान पिछड़े समुदाय की बन गई थी। इसके लिए आवश्यक था उनके बीच जन–जागरण पैदा करना, उनको एकजुट करना, उनकी भागीदारी से आगे बढ़ना। इसके लिए आवश्यक था उनका विश्वास जितना"*। थारु प्रतिभागी के अनुसार *"नानाजी ने और संस्थान ने थारु गांव में कई कार्यक्रम चलाए,*

कार्यक्रम से हमको जोड़ा, समाज में जनजागृति आई, समाज के लोग एकजुट हुए और आज समुदाय में एकजुटता है, लोग अपनी बात रखते है, अपने लोगों के लिए खड़े होते है, जो पहले नही था"।

शिक्षा सुधार : थारु समुदाय में शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने के लिए थारु समुदाय के सहयोग एवं भागीदारी से थारु गांव के पास थारु शिक्षण संस्थान की नीव रखी गई। थारु बच्चों के लिए छात्रावास की स्थापना, बाल संस्कार के माध्यम से नैतिक शिक्षा, बुनियादी एवं अनौपचारिक शिक्षा, श्रम साधना जैसे कार्यक्रम का आयोजन, थारु समुदाय के शिक्षकों के माध्यम से बच्चों में विश्वास बहाली को प्रोत्साहन, बच्चों के समुचित विकास के लिए सरकारी सहयोग से इंडोर स्टेडियम और बालिका आईटीआई की स्थापना, मार्गदर्शन सहयोग के माध्यम से बालक एवं बालिकाओं को कोचिंग सुविधा, उच्च–शिक्षा, रोजगार, स्व–रोजगार, सरकारी नौकरी की तैयारी आदि की समुचित जानकारी देना। जिसका लक्ष्य शिक्षा के महत्व को थारु समुदाय में उतारना और उन्हें सशक्त और जागरूक बनाना था। स्वयंसेवी संगठन के प्रतिभागी के अनुसार *"शिक्षा की स्थिति थारु समुदाय में बहुत ही दयनीय थी, बच्चे स्कूल नही जाते थे, कम उम्र में ही वह लकड़ी लाने, मछली पकड़ने और अन्य गतिविधियों में लगे रहते थे, स्कूल भी दूर थे और समाज में शिक्षा को लेकर कुछ बढ़िया भाव भी नही रहता था। लेकिन बिना शिक्षा के उनका उत्थान भी संभव नही था। नानाजी ने उनकी शिक्षा को बेहतर करने के लिए कई प्रयास शुरू किए आज उसके बेहतर परिणाम मिल रहे है"। थारु* प्रतिभागी के अनुसार *"समाज में शिक्षा को लेकर उतनी बढ़ियाँ स्थिति नही थी। लेकिन आज बढ़ियाँ हुई है। आज थारु समुदाय के बच्चे अच्छी शिक्षा ले रहे, उनको बढ़ियाँ मार्गदर्शन मिल रहा, आज हमारे समुदाय के बच्चे सरकारी नौकरियों में है, उसकी तैयारी भी कर रहे, नौकरियों में हमारा प्रतिशत बढ़ा है, जो पहले नही के बराबर था"।*

चित्र २. थारु समुदाय के उत्थान में नानाजी देशमुख का देशज समाज कार्य हस्तक्षेप

गरीबी निवारण : थारु समुदाय में गरीबी निवारण और आजीविका सुरक्षा के लिए कृषि सुधार एवं नवोन्मेष के तहत एक फसलीय खेती से दो से तीन फसलों की खेती, फसल विविधता, परंपरागत बीज संरक्षण, उन्नत बीज एवं प्रगतिशील खेती, सिंचाई सुविधा का विकास, कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से अनुकूल दशाओं के निर्माण पर विशेष ध्यान। रोजगार उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम, वन औषधि संग्रह एवं बिक्री, दोना–पत्तल निर्माण, स्वावलंबन पदयात्रा, परंपरागत समान बिक्री केंद्र, महिला सशक्तिकरण एवं भागीदारी का विशेष ध्यान के साथ आजीविका सृजन एवं सामुदायिक आत्मनिर्भरता को विशेष महत्व दिया गया। स्वयंसेवी संगठन के प्रतिभागी के अनुसार *"थारु समुदाय में आजीविका का मुख्य स्रोत खेती थी, लेकिन एक फसल ही मुश्किल से निकलती थी। उसमें भी उसका उत्पादन बहुत कम था। कृषि में नवोन्मेष का अभाव था। संस्थान ने इसे दूर करने का प्रयास किया। रोजगार के अवसर पैदा करने और महिला सशक्तिकरण को मजबूत करने के लिए विविध प्रकार के प्रशिक्षण, मार्गदर्शन, सहयोग दिया गया। बाजार और आय सृजन के अवसर पैदा किए गए। इन प्रयासों से समुदाय में आजीविका सुरक्षा को मजबूती मिली"*। थारु प्रतिभागी के अनुसार *"पहले एक ही फसल होती थी, सिंचाई का अभाव रहता था। आज कई फसल निकाल रहे, सिंचाई के साधन भी बढ़ियाँ हुए है। आप देख रहे है कि कितनी फसले यहां लगी है। महिलाएं अपना रोजगार कर रही है उससे भी पैसा बन रहा है। थारु समुदाय में पहले कौशल नही था लेकिन आज कौशल बढ़ा उससे लोग पैसा बना रहे है"*।

स्वास्थ्य सुधार : थारु समुदाय में स्वास्थ्य सुधार के लिए थारु गांवों में स्वास्थ्य जागरूकता एवं शिक्षा कार्यक्रम, सरकारी सहायता से सचल चिकित्सा सेवा, निःशुल्क दवा वितरण, टीकाकरण, संक्रामक रोग एवं बचाव की जानकारी, आयुर्वेद चिकित्सा जागरूकता एवं आयुर्वेदिक दवाओं का दादी मां का बटुआ (किट), पोषण एवं देखभाल, स्वास्थ्य परामर्श एवं निर्देशन जैसी सुविधाएं प्रदान की गई। जिसका लक्ष्य थारु समुदाय में स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार लाना और बेहतर स्वास्थ्य तक उनकी पहुँच बढ़ाना था। स्वयंसेवी संगठन के प्रतिभागी के अनुसार *"थारु समुदाय में स्वास्थ्य जागरूकता एवं सुविधा की कमी को देखते हुए कार्यक्रम चलाए गए। आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिए भी उन्हें जागरूक किया गया"*। थारु प्रतिभागी के अनुसार *"पहले सुविधा नही थी अभी तो स्वास्थ्य के लिए सभी सचेत रहने लगे है, साफ–सफाई का ध्यान रखते है। बच्चों का टीकाकरण भी करते और उनका जन्म अस्पताल में कराते। अब अस्पताल भी नजदीक में बन गया है, अब सुविधा बढ़ी है। आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिए गोंडा जाते है और घर में भी करते है"*।

सामाजिक समावेशन : थारु समुदाय में सामाजिक बहिष्करण से सामाजिक समावेशन के लिए संस्थान के सभी कार्यक्रमों में थारु समुदाय की पहल एवं भागीदारी के अवसर का विशेष ध्यान रखना, कोशिश करना कि पहल से लेकर कार्यक्रम के निष्पादन तक की भूमिका में थारु समुदाय ही रहे। इसके साथ ही थारु गांवों में बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए उनको लामबंद करना और उसकी वकालत करना। थारु समुदाय से संबंधित वार्षिक सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन, महाराणा प्रताप जयंती उत्सव, विशिष्ट व्यक्ति (प्रशासनिक एवं सामाजिक) प्रवास एवं सामाजिक समरसता सहभोज कार्यक्रम, थारु ग्राम स्वराज पदयात्रा, थारु केंद्रित प्रदर्शनी एवं मेलों का आयोजन प्रमुखता से शामिल है। जिसका लक्ष्य थारु समुदाय के अलगाव को दूर कर मुख्यधारा के समाज के समक्ष खड़ा करना, उनके अंदर स्वाभिमान जगाना, उनकी पहचान एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को मजबूत करना, सामाजिक समरसता और अंत्योदय के लक्ष्य को हाशिल करना था। स्वयंसेवी संगठन के प्रतिभागी के अनुसार *"थारु समुदाय दूर–दराज के जंगल में स्थित गांवों में निवास करते है, जहां बुनियादी सुविधाओं का अभाव रहा, जिससे वह बाहरी समुदाय से कटे रहे।*

दूसरा थारु समुदाय का बाहरी समुदाय से असुरक्षा और अविश्वास का भाव बहुत रहा इससे भी यह कटे रहे। इसको दूर करने का प्रयास किया गया"। वहीं दूसरे स्वयंसेवी संगठन के प्रतिभागी के अनुसार *"थारु समुदाय में डर और चिंता की भावनाएं दिखाई देती थी, जिसकी वजह से यह बाहरी समुदाय से ज्यादा घुलते–मिलते नही थे, शिक्षा और जागरूकता कम होने से इनकी पहचान एक पिछड़े समुदाय की बन गई थी"*। थारु प्रतिनिधि के अनुसार *"पहले तो थारु गांव में सड़क तक नही थी ना ही पुल थे, ना ही बिजली*

थी, कुछ भी नही था, लेकिन अभी बहुत कुछ अच्छा हुआ है, सरकार ध्यान देती है, इन सबका विकास हुआ है"। वहीं दूसरे थारु प्रतिभागी के अनुसार *"समाज के सहयोग से हम सांस्कृतिक कार्यक्रम करते है, अपने पूर्वज महाराणा प्रताप की जयंती मनाते है, उनकी प्रतिमा संस्थान के सहयोग से बनी है, यह हमलोगों के लिए गर्व की बात है। अब थारु समुदाय की भागीदारी राजनीति में भी बढ़ रही है"।* वहीं तीसरे थारु प्रतिभागी के अनुसार *"आज बाहर के बड़े लोग आज हमारे साथ बैठकर खाना खाते है, हमारे नृत्य और कला को सम्मान देते है, हमे बहुत खुशी और गर्व होता है। पहले ऐसा नही था यह नानाजी के प्रयास से हुआ है। हम नानाजी के बहुत आभारी है। हम संस्थान के बहुत आभारी है"।*

थारु समुदाय में नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप का परिणाम : थारु समुदाय में नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप के परिणाम को तालिका 01 में दर्शाया गया है।

तालिका 1. थारु समुदाय में नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप का परिणाम

विशेषता	विवरण
सामुदायिक एकीकरण एवं भागीदारी	▪ समुदाय में सामूहिक चेतना एवं संगठनात्मक क्षमता का विकास ▪ सामुदायिक भागीदारी और नेतृत्व की सुदृढ़ स्थापना ▪ युवाओं की सक्रिय भूमिका एवं नेतृत्व क्षमता का उभार ▪ समुदाय में निर्णय लेने की क्षमता का विकास ▪ थारु समाज में संगठित सामाजिक संरचना का निर्माण
गरीबी निवारण	▪ कौशल विकास एवं स्थानीय प्रशिक्षक निर्माण के माध्यम से आजीविका के नए अवसर ▪ कृषि सुधार एवं नवोन्मेष, उत्पादन वृद्धि एवं परंपरागत बीज संरक्षण से आय में स्थिरता ▪ महिला सशक्तिकरण के माध्यम से अर्थव्यवस्था में सहभागिता ▪ बाजार विकास से उत्पादों का मूल्य संवर्धन एवं आय वृद्धि ▪ आर्थिक स्वावलंबन एवं टिकाऊ आजीविका के अवसरों का सृजन ▪ आय के स्थानीय स्रोतों का विकास ▪ परंपरागत ज्ञान और संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन ▪ पलायन में कमी
शिक्षा सुधार	▪ शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं नामांकन में वृद्धि ▪ संस्कार–केन्द्रित, बुनियादी एवं अनौपचारिक शिक्षा का प्रसार ▪ स्थानीय (थारु) शिक्षकों की भागीदारी से सांस्कृतिक अनुकूलता ▪ बच्चों और युवाओं के समग्र व्यक्तित्व एवं नैतिक विकास को प्रोत्साहन ▪ समुदाय–सापेक्ष शिक्षा ▪ शैक्षणिक निरंतरता में वृद्धि

	▪ बालिकाओं और युवाओं के अवसरों का विस्तार ▪ शिक्षा के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता ▪ सरकारी सेवाओं में थारु समुदाय का प्रतिनिधित्व
स्वास्थ्य सुधार	▪ स्वास्थ्य जागरूकता, टीकाकरण एवं बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता ▪ परंपरागत आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं का समन्वय ▪ पोषण, मातृ–शिशु देखभाल एवं निवारक स्वास्थ्य व्यवहारों में सुधार ▪ स्वास्थ्य परामर्श से रोगों की रोकथाम एवं कार्यक्षमता में वृद्धि ▪ कुपोषण एवं रोगों में कमी
सामाजिक समावेशन	▪ समुदाय के सदस्यों को सहभागिता एवं पहल के अवसर ▪ बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच एवं सामाजिक अधिकारों की प्राप्ति ▪ सांस्कृतिक पहचान, आत्मगौरव एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान का पुनर्जागरण ▪ सामाजिक जुड़ाव, सम्मान एवं गरिमापूर्ण जीवन की अनुभूति ▪ समुदाय के भीतर सामाजिक समरसता और सहयोग की भावना का सुदृढ़ीकरण ▪ सामाजिक भेदभाव में कमी
समेकित सामुदायिक परिणाम	▪ सामुदायिक जागरूकता एवं एकजुटता ▪ सामुदायिक स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता ▪ आर्थिक सशक्तिकरण एवं आजीविका स्थायित्व ▪ शैक्षिक प्रगति एवं कौशल विकास ▪ स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार ▪ सांस्कृतिक स्वाभिमान, सामाजिक समरसता एवं मुख्यधारा से जुड़ाव

थारु समुदाय की वर्तमान चुनौतियां एवं समस्याएं : एक लंबे दशक तक सामान्य समुदाय और मुख्यधारा से दूर थारु समुदाय की स्थिति बनी रही, लेकिन नानाजी के देशज हस्तक्षेप से इस समुदाय के जीवन में सकारात्मक सुधार परिलक्षित हुए। आज समय के साथ थारु समुदाय में कई परिवर्तन उनकी चिंता और समस्या का रूप बनकर उनके सामने खड़े है। चित्र संख्या 08 में थारु समुदाय की वर्तमान चुनौतियों/समस्याओं को दर्शाया गया है।

जनसांख्यिकी बदलाव की चिंता : थारु समुदाय के गांवों के आस–पास तेजी से अन्य संप्रदाय की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। इससे थारु समुदाय आपने आस–पास तेजी से होती जनसंख्या संरचना में बदलाव से चिंतित है। यह चिंता उन्हें अपनी सुरक्षा, जमीन, जंगल, आजीविका और थारु समुदाय की महिलाओं के सम्मान से जुड़ी है। थारु प्रतिनिधि के अनुसार *"हमारे आस–पास तेजी से उनकी जनसंख्या (अन्य संप्रदाय) बढ़ रही है, वह हमारी जमीन गिरवी रखते है और व्याज पर पैसा और समान देते बाद में हमसे बहुत सारा व्याज लेते और हमारा शोषण भी करते"*।

प्रवासन : हाल के वर्षों में कुशल थारु समुदाय के सदस्यों का प्रवासन भी तेजी से बढ़ा है। वह बड़े शहरों में अच्छी आजीविका के लिए गांव से निकल जाते है। इसका दबाव थारु समुदाय के पारिवारिक सदस्यों और समुदाय पर पड़ता है। इसको लेकर थारु सदस्यों के बीच चिंता का भाव है। थारु प्रतिनिधि के अनुसार *"जहां अच्छा काम और पैसा मिलता है वहां समुदाय के सदस्य चले जाते है। इससे परिवार और समाज कमजोर होता है। हमारी संख्या कम है, छोटा गांव है, उसमें भी हमारी संख्या और कम हो रही है"।*

महिला बोझ : थारु गांव में प्रवासन का सबसे अधिक दबाव महिलाओं पर देखने को मिलता है। महिलाओं पर असमान बोझ बढ़ गया है। अधिकतर पुरुष प्रवास से खेती से लेकर सभी जिम्मेदारियां महिलाओं के कंधों पर आ जाती है। थारु प्रतिनिधि के अनुसार *"मेरे पिता और भाई दोनों बाहर है। वह होटल में काम करते है। उनके बाहर जाने से घर में मां और हम दो बहने है, सभी काम और घर हमें ही देखना पड़ता है"।*

शोषण एवं दुर्व्यवहार : कुशल प्रवासन बढ़ने से अच्छी आजीविका और अच्छा पैसा कमाने के लिए थारु समुदाय के सदस्य छोटे एवं बड़े शहरों में गए है। जहां उनको शोषण और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। शांतप्रिय और कम प्रतिरोधी स्वभाव के चलते उन्हें इससे आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है। प्रवासन गंतव्य स्थानों पर समुदाय के सदस्यों का अनुचित शोषण उनके लिए चिंता का सवाल है। थारु प्रतिनिधि के अनुसार *"मालिक काम का पैसा रोक लेते है, पूरा पैसा नही देते है, कभी बहुत कम पैसा देते है, थारु लड़कियों को बुरी नजर से देखते है और दुर्व्यवहार करते है, विरोध करने पर काम से हटा देते है"।*

आर्थिक गिरावट : थारु समुदाय के सदस्यों में आधुनिकता और गतिशीलता साफ देखी जा सकती है। इसके साथ ही समाज में कई नकारात्मक प्रवृत्तियों ने जन्म लिया है, जिसमें शादी–व्याह में अधिक खर्च, आधुनिक साधन, नशाखोरी आदि जिससे समुदाय में आर्थिक गिरावट देखी जा रही है। थारु प्रतिनिधि के अनुसार *"हाल के वर्षों में कर्ज और नशाखोरी की घटना बढ़ रही है, नए–नए लड़के नशाखोरी कर रहे है, इससे परिवार और समाज में अच्छा नही हो रहा। इससे परिवार और समाज दोनों का नुकसान हो रहा"।*

चित्र 8. थारु समुदाय की वर्तमान चुनौतियां/समस्याओं का ढांचा

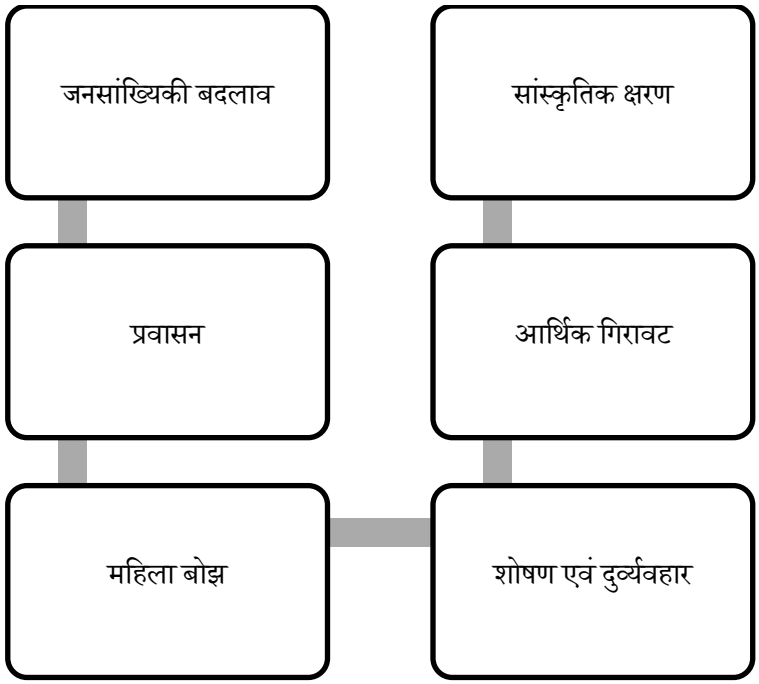

सांस्कृतिक क्षरण : थारु समुदाय की एक समृद्ध और गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा रही है। शांतप्रिय और सरल स्वभाव उन्हें अन्य समुदाय से अलग बनाता है। लेकिन समुदाय में उभरती चुनौतियों एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों से थारु समुदाय में सांस्कृतिक क्षरण के संकट का सवाल पैदा हो रहा है। थारु प्रतिनिधि के अनुसार *"अब कई चीजें बदल गई है, गांव में कई बदलाव जो पहले नही थे अब दिखाई देते, कुछ अच्छे है, लेकिन कुछ थारु संस्कृति और गौरव के लिए अच्छा नही है, यह हमारे समुदाय को नुकसान पहुचा रही"।*

7. निष्कर्ष एवं सुझाव

उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जिले की तराई क्षेत्र में बसा थारु समुदाय सांस्कृतिक रूप से समृद्ध लेकिन सामाजिक रूप से हाशिए पर पड़े पिछड़े समुदाय की पहचान के साथ जीवन जीने के लिए विवश था। जहां थारु समुदाय में शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी और सामाजिक बहिष्करण जैसी समस्याओं ने समुदाय के जीवन को नारकीय बना दिया था। इस पिछड़े समुदाय की पीड़ा और पिछड़ेपन को नानाजी देशमुख ने देखा और इस क्षेत्र को अपना कर्म क्षेत्र बनाया। नानाजी ने अपनी देशज दृष्टि और पहल से दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से थारु समुदाय की भलाई और उनके उत्थान के लिए रणनीति और देशज कार्यक्रम विकसित किए। नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप में थारु समुदाय का विश्वास जीतना, उनकी भागीदारी और पहल पर विशेष महत्व देना, सांस्कृतिक पहचान को संरक्षण, सांस्कृतिक गौरव एवं स्वाभिमान, सामाजिक समावेशन की दशाओं का विकास, कौशल विकास एवं फसल सुधार, आजीविका सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा से नव–परिवर्तन की आधारशिला, स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार एवं स्वस्थ्य जीवनशैली की दशाओं का विकास जैसे अनेक देशज पहल शामिल रहे। नानाजी देशमुख के देशज समाज कार्य हस्तक्षेप का परिणाम थारु समुदाय में एकीकरण, जागरूकता, शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, सामाजिक समावेशन पर पड़ा। जिसके परिणाम स्वरूप समुदाय में सामुदायिक स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता की दशाओं का विकास, आर्थिक सशक्तिकरण एवं आजीविका स्थायित्व को बल, शैक्षणिक प्रगति एवं कौशल विकास, स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार, बुनियादी सुविधाओं का विकास, सरकारी योजनाओं एवं नौकरियों में थारु प्रतिनिधित्व एवं सांस्कृतिक स्वाभिमान, सामाजिक समरसता और मुख्यधारा से जुड़ाव को बल मिला। लेकिन समय के साथ नवीन चुनौतियां और समस्याएं भी उभरती रहती है। जिससे निपटना और उनका समाधान करना आवश्यक होता है। थारु समुदाय की वर्तमान चुनौतियां एवं समस्याएं थारु समुदाय की पहचान और सांस्कृतिक विरासत के लिए चिंता का विषय है। थारु समुदाय की वर्तमान चुनौतियों एवं समस्याओं से निपटने के लिए संस्थान को अधिक केन्द्रीयता के साथ देशज समाज कार्य दृष्टिकोण एवं हस्तक्षेप के माध्यम से काम करने की आवश्यकता है। जिसमें प्रस्तावित देशज समाज कार्य हस्तक्षेप के मध्यम से वह वर्तमान चुनौतियों एवं समस्याओं के प्रति जन–जागरण, थारु गांव में थारु पुरुष, महिला एवं युवाओं के सचेतक समूह, प्रवासन गंतव्य स्थानों पर थारु सदस्यों के सचेतक समूह की स्थापना और उनके माध्यम से वर्तमान चुनौतियों एवं समस्याओं से निपटने के तौर–तरीके विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। इसके साथ ही संस्थान को थारु समुदाय में सुरक्षात्मक उपाय एवं अधिकार, सरकारी सुविधाओं की जानकारी और सांस्कृतिक क्षरण के दुष्परिणाम से भी परिचित कराने की आवश्यकता है।

8. अभिस्वीकृति

शोधकर्ता (डॉ. अभिषेक कुमार राय) भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से पोस्ट–डॉक्टोरल फेलोशिप प्राप्तकर्ता है। इस शोध पत्र को संभव बनाने में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित पोस्ट–डॉक्टोरल फेलोशिप एवं नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान के गोंडा प्रकल्प का विशेष सहयोग रहा है। इसलिए मैं इन दोनों के प्रति अपनी कृतज्ञता और धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

9. संदर्भ

1. अभय, महाजन. (2015). समाज को संबल प्रदान करने वाली पदयात्रा. *समरसता विशेषांक मधुकर: दीनदयाल शोध संस्थान*, 84–89.
2. इंडिया डेवलपमेंट रिव्यू. (7 जून, 2024). इंटरजेनरेशनल रीज़िस्टन्स : थारु आदिवासी डिस्कशन देअर ऐक्टिविज़म. https://idronline.org
3. उपाध्याय, डी. (2016). *इन्टीग्रल ह्यूमनिज़म*. सुरुचि प्रकाशन.
4. एलिनस्की, एस. डी. (2016). रूल्स फॉर रेडिकल्स. विंटेज बुक्स.
5. एलिस, एफ. (2000). *रुरल लाइव्लीहुड एंड डाइवर्सिटी इन डेवलपमेंट*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. कार्लसन, बी. जी. (2020). *इन्डिजनस पीपल्स एंड डेवलपमेंट*. रूटलेज.
7. कुमारी, जे. एवं अन्य (2018). ए स्टडी ऑन सोशिओ–इकनॉमिक कॉन्डीशन ऑफ थारु ट्राइब्स इन बहराइच डिस्ट्रिक्ट ऑफ उत्तर प्रदेश इन इंडिया. *जर्नल ऑफ अप्लाइड एंड नेचुरल साइंस, 10*(3), 939–944.
8. क्रिसवेल, जे. डब्ल्यू., पोथ, सी. एन. (2018). *क्वालिटेटिव इन्क्वायरी एंड रिसर्च डिज़ाइन (चौथा संस्करण)*. सेज पब्लिकेशन्स.
9. ग्रे, एम., कोट्स, जे., और येलो बर्ड, एम. (2016). टुवार्ड्स एन अन्डर्स्टैन्डिंग ऑफ इन्डिजनस सोशल वर्क. इन एम. ग्रे, जे, कोटेस & एम. येलो बर्ड (संपादक), *इन्डिजनस सोशल वर्क अराउन्ड द वर्ल्ड: टुवार्ड्स कल्चरली रेलेवेंट एजुकेशन एंड प्रैक्टिस* (पृष्ट 13–30). रूटलेज.
10. चतुर्वेदी, आर., एवं अन्य (2016). स्पिसिफिक फूड कल्चर ऑफ थारु ट्राइब. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसप्लनेरी रिसर्च रिव्यू, 1*(4), 39–45.
11. ज़क्सा, वर्जिनियस. (2019). *ट्राइब्स एंड डेवलपमेंट इन इंडिया*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
12. टंडन, आर. (2015). *पार्टीसीपेटरी डेवलपमेंट इन इंडिया*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
13. तिवारी, रामकृष्ण. (2015). उत्तम स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता मूल आधार. *समरसता विशेषांक मधुकर: दीनदयाल शोध संस्थान*, 106–107.
14. तिवारी, सुरेन्द्र., तिवारी, क्रांतिदेव. (2015). प्रगति पथ पर बढ़ते कदम. *समरसता विशेषांक मधुकर: दीनदयाल शोध संस्थान*, 75–76.
15. त्रिपाठी, संत कुमार. (2015). थारु क्षेत्र की युवतियों में स्वावलंबन के बढ़ते कदम. *समरसता विशेषांक मधुकर: दीनदयाल शोध संस्थान*, 123–127.
16. द मिनिस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेर्स. (2015). मिनिस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. पुनर्प्राप्त http://tribal.nic.in/Content/EducationDivision.aspx
17. दीनदयाल रिसर्च इंस्टिट्यूट. (2025). *अबाउट अस*. दीनदयाल रिसर्च इंस्टिट्यूट. https://www.dri.org.in
18. देशपांडे, आर. (2017). ग्रासरूटस डेवलपमेंट एंड वालन्टेरी एक्शन इन इंडिया. *इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 52*(15), 45–52.
19. देशमुख, नानाजी. (2015). ग्रामोदय से आयेगी समरसता. *समरसता विशेषांक मधुकर: दीनदयाल शोध संस्थान*, 17–42.

20.देशमुख, यादवराव. (2015). हर खेत को पानी, हर हाथ को काम. *समरसता विशेषांक मधुकर: दीनदयाल शोध संस्थान*, 72–74.

21.द्विवेदी, गौरव राज, एवं अन्य. (2022). हेल्थ स्टैटस ऑफ ट्राइब्स ऑफ उत्तर प्रदेश विथ स्पेशल रेफ्रन्स टू हेल्थ सीकिंग बिहैवीयर ऑफ अनचारटेड थारु ट्राइब: ए मैपिंग रिव्यू. *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च, 156*(2), 186–190.

22.नागपाल, एस. (2019). ट्राइब्स हेल्थ इन इंडिया. जर्नल ऑफ सोशल डेवलपमेंट, 11(2), 89–103.

23.पाण्डेय, आर. (2018). इन्डिजनस डेवलपमेंट फिलासफी इन इंडिया. *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क*, *79*(2), 215–232.

24.पाण्डेय, आशीष कुमार एवं गुर्जर, पुष्पेंद्र सिंह. (2015). स्वावलंबी एवं स्वाभिमानी थारु समाज. *समरसता विशेषांक मधुकर: दीनदयाल शोध संस्थान*, 99–105.

25.पेन, एम. (2014). *मॉडर्न सोशल वर्क थ्योरी (फोर्थ अडिशन).* पालग्रेव मैकमिलन.

26.बेटेइल, ए. (2015). एजुकेशन एंड सोशल चेंज इन इंडिया. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

27.ब्राउन, वी., क्लार्क, वी. (2006). यूजिंग थीमैटिक एनालीसिस इन साइकालजी. *क्वालिटेटिव रिसर्च इन साइकोलॉजी, 3*(2), 77–101.

28.माथुर, एच. एम. (2019). लीडरशिप एंड ट्राइबल डेवलपमेंट इन इंडिया. *इंडियन जर्नल ऑफ़ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, 65*(3), 421–435.

29.यादव, आर., शर्मा, के. (2025). इम्पैक्ट ऑफ ग्लोबलाइज़ैशन ऑन इन्डिजनस आइडेंटिटी : ए केस ऑफ द थारु ट्राइब इन लखीमपुर खेरी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 13(4),* 1–10.

30.यादव, संगीता. (2017). कान्टिनूइटी एंड चेंज अमंग थारु ट्राइब: ए सोशिओ–कल्चरल स्टडी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च कल्चर सोसाइटी, 1(8), 173–178.

31.राय, अभिषेक कुमार. (2022). विदर्भ का कृषि परिदृश्य: देशज समाज कार्य हस्तक्षेप की संभावनाएं. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस रिसर्च. 8*(1), 96–109. https://socialsciencejournal.in.

32.राय, अभिषेक कुमार. (2023). नानाजी देशमुख का देशज समाज कार्य हस्तक्षेप. *शिक्षण संशोधन, 6*(7), 57–61. DOIs:10.2018/SS/202307013.

33.लहरी, वी. के. (2025). प्रॉब्लेम ऑफ थारु ट्राइब इन कॉनटेम्परोरी इंडिया: ए सोशिओ साइन्टिफिक स्टडी विथ स्पेशल रेफरेन्स टू उत्तर प्रदेश. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड इनोवैशन इन सोशल साइंस, IX*(II), 1415–1426.

34.लेखी, बर्षा. (2019). लॉस ऑफ ट्रडिशनल नॉलेज इज ड्यू टू लैक ऑफ डाक्यूमेन्टैशन. कल्चरल सर्वाइवल. पुनर्प्राप्त https://www.culturalsurvival.org

35.वर्मा, आर. & सिंह, ए. (2018). सोशिओ–इकनॉमिक स्टैटस ऑफ थारु ट्राइब. जर्नल ऑफ ट्राइबल स्टडी, 7(2),112–125.

*36.*वीवर, एच. एन. (2008). इन्डिजनस सोशल वर्क इन द यूनाइटेड स्टेट्स : रिफ्लेक्शन्स ऑन इंडियन कन्ट्री. इन एम. ग्रे, जे, कोटेस & एम. येलो बर्ड (संपादक), *इन्डिजनस सोशल वर्क अराउन्ड द वर्ल्ड: टुवार्ड्स कल्चरली रेलेवेंट एजुकेशन एंड प्रैक्टिस* (पृष्ट 71–82). एशगेट पब्लिशिंग.

37.शुक्ल, रामकृपाल. (2015). शिक्षित बालिका–शिक्षित समाज. *समरसता विशेषांक मधुकर: दीनदयाल शोध संस्थान*, 82–83.

38.श्रीवास्तव, आर. (2016). ट्राइबल लाइव्लीहुड एंड सोशल चेंज. इंडियन ऐन्थ्रपालजिस्ट, 46(1), 67–84.

39.संयुक्त राष्ट्र आम सभा. (2007). यूनाइटेड नेशन डेक्लरैशन ऑन द राइट्स ऑफ इन्डिजनस पीपल्स (रेसोल्यूशन ए/आरईएस/61/295).
https://www.refworld.org/legal/resolution/unga/2007/en/49353.

40.सिंह, एस. एन. एवं कश्यप, शिवेंद्र. (2015). समरस समुदाय–थारु समुदाय. *समरसता विशेषांक मधुकर: दीनदयाल शोध संस्थान*, 84–89.

41.सिंह, वी. के. (2018). ट्राइबल पॉपुलेशन एंड ट्राइबल कम्युनिटीज ऑफ उत्तर प्रदेश, इंडिया : एनालीसिस ऑफ सेंसस डेटा 2011. *ट्राइबल हेल्थ बुलेटिन*, *25* (1& 2), 12–26.

42.सुंदर, राम. (2015). सह जीवन की संस्कृति को संजोत थारु समाज. *समरसता विशेषांक मधुकर: दीनदयाल शोध संस्थान*, 77–81.

43.सेन, ए. (2018). एथिक्स एंड सोशल रीस्पान्सबिलटी. पेंगुइन इंडिया.

44.सैक्स, जे. डी. (2015). *द ऐज ऑफ सस्टैनबल डेवलपमेंट*. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस.

45.सोइनी, के., बर्क लैंड, आई. (2014). एक्सपलोरींग द सैंटिफिक डिसकोर्स ऑन कल्चरल सस्टैनबिलिटी. जियोफोरम, 51, 213–223.